Toppersnotes
Unleash the topper in you

SSC-CPO

कर्मचारी चयन आयोग- केंद्रीय पुलिस संगठन

भारतीय भूगोल एवं पर्यावरण

तथा

अर्थशास्त्र एवं सामान्य विज्ञान

SIERRA INNOVATIONS

भारत का भूगोल

1. भारत का विस्तार 1
2. भारत के भौगोलिक भू-भाग (हिमालय) 4
3. उत्तरी मैदानी प्रदेश 11
4. प्रायद्वीप पठारी प्रदेश 13
5. तटवर्ती मैदान 21
6. द्वीपीय समूह 25
7. भारतीय मानसून 27
8. भारत का अपवाह तंत्र 32
9. भारत मे प्राकृतिक वनस्पति 43
10. भारत की मिट्टी/मृदा 48
11. जलवायु 52
12. भारत मे खनिजो का वितरण 66
13. भारत के प्रमुख उद्योग 76
14. परिवहन तंत्र 81
15. कृषि 91

पर्यावरण अध्ययन

1. पर्यावरण अध्ययन का अर्थ 93
2. पर्यावरण अध्ययन की संकल्पना/ अवधारणा 95
3. पर्यावरण के घटक 96
4. पर्यावरण अध्ययन के उद्देश्य 98
5. पारिस्थितिकी एवं खाद्य श्रृंखला 99
6. प्रदूषण 101
7. जैव विविधता 103
8. जैव विविधता संरक्षण 104
9. मौसम एव जलवायु 106
10. मरूस्थल 110

अर्थशास्त्र

1. अर्थशास्त्र का परिचय 114
2. म्युचुअल फंड 120
3. राष्ट्रीय आय 122
4. मुद्रास्फीति 125
5. बैंकिंग 130
6. वित्तिय समावेशन 146
7. राजकोषीय नीति 153
8. वस्तु एव सेवा कर 159
9. व्यापार नीति 163
10. अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक संगठन 171
11. अर्थव्यवस्था के क्षेत्र 180
12. वित्त आयोग 185
13. सार्वजनिक वितरण प्रणाली (PDS) 187
14. ई–कॉमर्स 190
15. गरीबी 192
16. आर्थिक विकास 195
17. पंचवर्षीय योजनाए 198

भारत का भूगोल

भारतीय भूगोल

(Indian Geography)

भारत का विस्तार

- भारत का अक्षांशीय तथा देशान्तरीय विस्तार लगभग 30° है परन्तु भारत में उत्तर से दक्षिण तक की दूरी, पूर्व से पश्चिम की दूरी से अधिक है क्योंकि ध्रुवीय क्षेत्रों की ओर बढ़ने पर देशान्तर के बीच दूरी कम होती जाती है । परन्तु अक्षांशों के बीच दूरी समान रहती है ।
- भारत का क्षेत्रफल = 3287263 किमी.^{2} = लगभग 32.8 लाख किमी.^{2}
- विश्व के कुल क्षेत्रफल का 2.4% भारत का क्षेत्रफल है ।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का विश्व में 7th स्थान है ।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से अधिकतम क्षेत्रफल वाले देश–
  - **Russia**
  - **Canada**
  - **China**
  - **USA**
  - **Brazil**
  - **Australia**
  - **India**
  - **Argentina**
  - **Kazakhstan**
  - **Algeria**

- भारत की जनसंख्या 2011 की जनगणना के अनुसार 121 करोड है जो विश्व की जनसंख्या का 17.5% है ।
- जनसंख्या के आधार पर विश्व में भारत का दूसरा स्थान है ।

  - **Gujarat**
  - **Rajasthan**
  - **Madhya Pradesh**
  - **Chhattisgarh**
  - **Jharkhand**
  - **West Bengal**
  - **Tripura**
  - **Mizoram**

- भारत का समय **GMT** से 5½ घंटे आगे है ।
- 82½°**E** निम्नलिखित राज्यों से गुजरती है:–
- **Uttar Pradesh**
- **Madhya Pradesh**
- **Chhattisgarh**
- **Odisha**
- **Andhra Pradesh**

- 2007 में **National Institute of Advanced Studies** ने उत्तर पूर्व के समय को आधा घंटा आगे करने का सुझाव था। अतः इस सुझाव पर अमल किया जा सकता है ।

Border of India:-

1. स्थलीय सीमाः–

- भारत की स्थलीय सीमा लगभग 15200 किमी. (15106.7 किमी.) है ।
- भारत की स्थलीय सीमा निम्न देशों को स्पर्श करती हैः–

(i). Bangladesh = 4096.7 km
(ii). China = 3488 km
(iii). Pakistan = 3323 km
(iv). Nepal = 1751 km
(v). Myanmar = 1643 km
(vi). Bhutan = 699 km
(vii). Afghanistan = 106 km

- भारत–पाकिस्तान सीमा रेखा = रेडक्लिफ रेखा
- भारत–चीन सीमा रेखा = मैकमोहन
- भारत–अफगानिस्तान सीमा रेखा = डूरन्ड रेखा

2. जलीय सीमाः–

- भारत की जलीय सीमा = 7516.6 किमी.
  Mainland = 5422.6 km & Island = 2094 km
- सर्वाधिक तटीय सीमा वाले राज्य/केन्द्र शासित प्रदेशः–
  - Andaman & Nicobar
  - Gujarat
  - Andhra Pradesh
  - Tamilnadu
  - Maharashtra
  - Kerala
  - Odisha
  - Karnataka
  - West Bengal
  - Lakshadweep
  - Goa
  - Puducherry
  - Daman & div

तटवर्ती/सीमावर्ती सागर:-

1. सीमावर्ती सागर **(Territorial Sea)**
2. संलग्न सागर **(Contiguous Sea)**
3. अनन्य आर्थिक क्षेत्र **(Exclusive Economic Zone)**

1. सीमावर्ती सागर:-

- यह क्षेत्र आधार रेखा से 12**nm** तक स्थित है ।
- इस क्षेत्र में भारत का एकाधिकार है ।

2. संलग्न सागर:-

- यह क्षेत्र आधार रेखा से 24**nm** तक स्थित है ।
- इस क्षेत्र में भारत के पास वित्तीय अधिकार है ।
- यहाँ भारत सीमा शुल्क **(Custom Duty)** वसूल सकता है ।

भारतीय उपमहाद्वीप **(Indian Subcontinent):-**

- उपमहाद्वीपीय उस भाग को कहा जाता है जो महाद्वीप में अपनी एक पृथक पहचान रखता हो ।
- भौगोलिक, सांस्कृतिक तथा पर्यावरण की दृष्टि से भारत एशिया के अन्य देशों से पृथक पहचान रखता है ।
- भारत के उत्तरी भाग में पर्वत स्थित है जैसे - हिन्दुकुश, सुलेमान, हिमालय, पूर्वांचल तथा पूर्व में अराकनयोगा जो भारत को एशिया के मुख्य भूभाग से पृथक करते है ।
- भारत के दक्षिणी भाग में महासागरीय क्षेत्र स्थित है जो भारत तथा पडौसी देशों को पृथक पहचान दिलाता है ।
- भारतीय उपमहाद्वीप में निम्नलिखित देश सम्मिलित है:-

➢ **INDIA**	➢ **Bhutan**
➢ **Pakistan**	➢ **Bangladesh**
➢ **Afghanistan**	➢ **Shri Lanka**
➢ **Nepal**	➢ **Maldives**

भारत के भौगोलिक भू–भाग
(Physical Division of India)

भारत के भौगोलिक भू–भागः–

1. **Himalayan Mountain Region**
2. **Northern Plain Region**
3. **Peninsula Plateau Region**
4. **Coastal Plain Region**
5. **Island Groups Region**

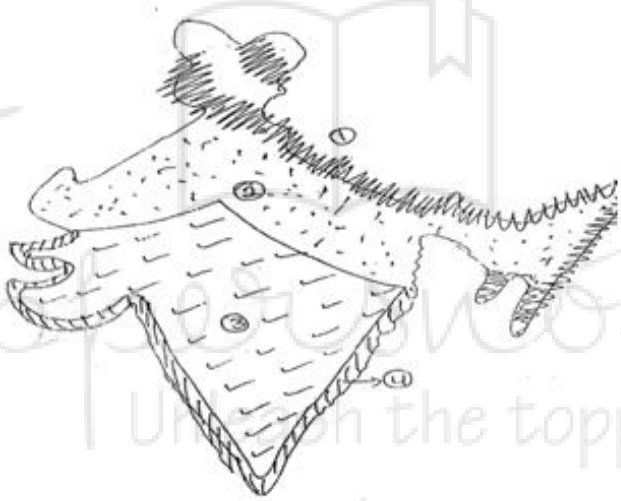

1. हिमालय पर्वतीय प्रदेशः–

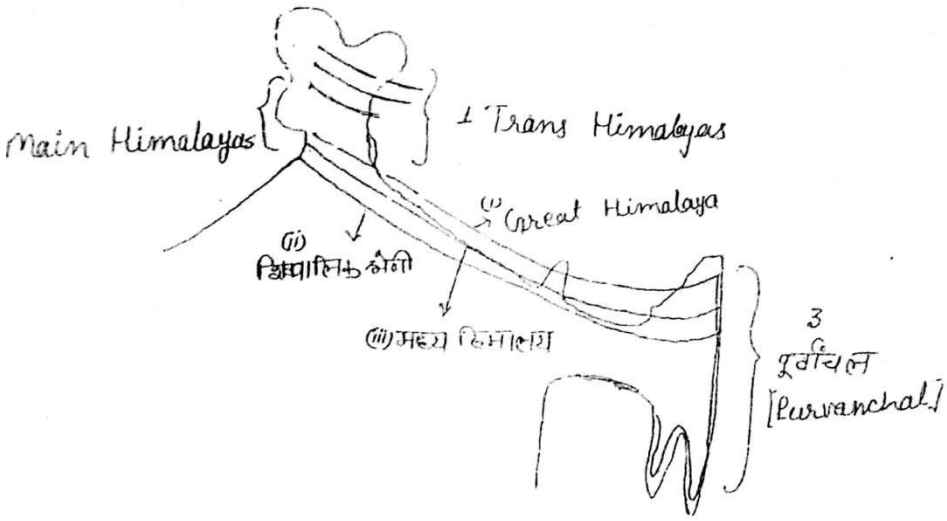

- भारत के उत्तरी सीमा पर स्थित पर्वत तंत्र हिमालय पर्वतीय प्रदेश का निर्माण करता है ।
- इस पर्वत तंत्र का निर्माण नवीन वलित पर्वतों से हुआ है ।
- ये वलित पर्वत 'यूरेशियन प्लेट' तथा 'भारतीय प्लेट' के अभिसरण से निर्मित हुए है ।
- क्योंकि इस पर्वत तंत्र का निर्माण टरशरी काल में हुआ है, इसलिए इसे 'टर्शयरी पर्वत तंत्र' भी कहा जाता है । **Tertiary Period** (टर्शयरी काल) = (70 मिलियन वर्ष–11 मिलियन वर्ष पूर्वतक)
- यह पर्वत तंत्र विश्व का सबसे ऊँचा पर्वत तंत्र है, इसलिए इस तंत्र में बहुत से अल्पाइन हिमनद भी पाये जाते है ।
- भारत की सबसे प्रमुख नदियों का उदगम इसी पर्वत पर स्थित हिमनदों से होता है ।
- इस पर्वतीय प्रदेश को तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है:–

A. <u>Trans Himalaya:-</u>

हिमालय पर्वतीय प्रदेश का सबसे उत्तरी भाग ट्रांस हिमालय कहलाता है ।

- यह मुख्य रूप से 'जम्मू–कश्मीर' व 'तिब्बत' में स्थित है ।
- मुख्य हिमालय के वृष्टि छाया क्षेत्र में स्थित होने के कारण यहाँ शुष्क परिस्थितियाँ पाई जाती है ।
- इस भाग में तीन प्रमुख पर्वत श्रेणियाँ पाई जाती है:–

(a) काराकोरम श्रेणी:–

- ट्रांस हिमालय की सबसे उत्तरी श्रेणी।
- ट्रांस हिमालय की सबसे लम्बी व ऊँची श्रेणी है ।
- 'माउण्ट गोडविन ऑस्टिन' इस श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी है, जो कि भारत की सबसे ऊँची तथा विश्व की दूसरी सबसे ऊँची चोटी है । (8611 किमी.)
- यह श्रेणी अपने अल्पाइन हिमनदों के लिए विख्यात है:–

1. बतुरा
2. हिस्पार
3. बियाको
4. बालतोरो
5. सियाचिन

- सियाचिन हिमनद' नुबरा घाटी में स्थित है तथा इस हिमनद के पिघलने से नुबरा नदी का उदगम होता है, जो कि सिन्धु की सहायक नदी है ।

(b) लद्दाख श्रेणी:–

- काराकोरम श्रेणी के दक्षिण में स्थित।
- तिब्बत में इस श्रेणी का विस्तार 'कैलाश पर्वत' के नाम से जाना जाता है ।
- तिब्बत में इस श्रेणी के दक्षिण में 'मानसरोवर झील' स्थित है ।
- 'रकापोशी चोटी' इस श्रेणी की सबसे ऊँची चोटी है ।

(c) जास्कर श्रेणी:–

- ट्रांस हिमालय की सबसे दक्षिणी श्रेणी ।
- जास्कर तथा लद्दाख श्रेणी के मध्य सिन्धु घाटी स्थित है ।

Note:- लद्दाख पठार:–

- काराकोरम श्रेणी तथा लद्दाख श्रेणी के मध्य स्थित अन्तः पर्वतीय पठार ।
- इस पठार की ऊँचाई लगभग 4800 मीटर है, तथा यह भारत का सबसे ऊँचा पठार है ।
- वृष्टि छाया क्षेत्र में स्थित होने के कारण इस पठार पर शुष्क परिस्थितियाँ पाई जाती है, इसलिए यह एक 'ठण्डे मरूस्थल' का उदाहरण है ।
- इस पठार पर बहुत सी खारे पानी की झील पाई जाती है ।

B. Main Himalaya:-

- यह पर्वतीय प्रदेश का दूसरा प्रमुख भाग है ।
- यह भाग सिन्धु नदी घाटी से ब्रह्मपुत्र नदी घाटी तक स्थित है ।
- इस भाग के दोनों ओर अक्षसंधीय मोड **(Systaxial Bend)** पाया जाता है ।
- इस भाग भाग की चौडाई पश्चिमी भाग में अधिक तथा पूर्वी भाग में कम है ।
- यह लगभग 2400 किमी. की दूरी में विस्तृत है ।
- इस भाग में तीन प्रमुख श्रेणियाँ है:–

(i). वृहत हिमालय **(Great Himalaya)**
(ii). मध्य हिमालय **(Middle Himalaya)**
(iii). शिवालिक **(Shivalik)**

(a). वृहत हिमालय(Great Himalaya):-

- यह श्रेणी नंगा पर्वत से नामचा बरवा के बीच स्थित है ।
- यह 2400 किमी. की दूरी से विस्तृत है तथा इसकी औसत चौडाई 25 किमी. एंव औसत ऊँचाई 6100 मी. है ।
- ऊँचाई अधिक होने के कारण यह पर्वत वर्ष भर बर्फ से ढका रहता है अतः इसे हिमाद्री भी कहा जाता है ।
- यह विश्व की सबसे ऊँची पर्वत श्रेणी है ।
- इस श्रेणी में विश्व की सबसे ऊँची चोटी माउण्ट एवरेस्ट (8848 मी.) स्थित है ।
- माउण्ट एवरेस्ट नेपाल–चीन सीमा पर स्थित है ।
- इसे नेपाल में सागरमाथा कहते है । (माउण्ट एवरेस्ट को)
- इस पर्वत पर बहुत से प्रमुख हिमनद स्थित है । **e.g.-** गंगोत्री, यमुनोत्री, सतोपंथ, पिंडारी, मिलान

etc.

- इस श्रेणी में बहुत से दर्रे हैं जिन्हें स्थानीय भाषा में 'ला' कहा जाता है ।
- वृहत हिमालय के प्रमुख दर्रेः–

➢ **Burzila**	➢ **Niti**
➢ **Zajila**	➢ **Lipu Lekh**
➢ **Baralachha**	➢ **Nathula**
➢ **Shipkila**	➢ **Jaleepla**
➢ **Mana**	➢ **Bomdil**

(i). बुर्जिला दर्राः–

* यह श्रीनगर को **POK** से जोडता है ।
* इस दर्रे के माध्यम से घुरूपैठ गतिविधियाँ होती है ।

(ii). जोजिला दर्राः–

* यह दर्रा श्रीनगर को लेह से जोडता है ।
* इस दर्रे से **NH-1D** गुजरता है ।

(iii). बारालच्छा दर्राः– यह दर्रा हिमाचल प्रदेश को लेह से जोडता है ।

(iv). शिपकिला दर्राः–

* यह दर्रा हिमाचल प्रदेश को तिब्बत से जोडता है ।
* इस दर्रे का निर्माण सतलज नदी द्वारा किया गया है ।
* इसी दर्रे के माध्यम से सतलज नदी भारत में प्रवेश करती है ।
* इस दर्रे के माध्यम से चीन के साथ व्यापार किया जाता है ।

(v). माना:– यह दर्रा उत्तराखण्ड को तिब्बत से जोडता है ।

(vi). नीतिः– यह दर्रा उत्तराखण्ड को तिब्बत से जोडता है ।

(vii). लिपुलेख दर्राः–

* यह दर्रा उत्तराखण्ड को तिब्बत से जोडता है ।
* इस दर्रे के माध्यम से कैलाश मानसरोवर की यात्रा की जाती है । अतः इसे 'मानसरोवर का द्वार' भी कहा जाता है ।
* इस दर्रे के माध्यम से चीन के साथ व्यापार किया जाता है ।

(viii). नाथूला दर्रा:-

* यह दर्रा सिक्किम को तिब्बत से जोडता है ।
* इस दर्रे से प्राचीन रेशम मार्ग गुजरता था।
* इस दर्रे का उपयोग चीन के साथ व्यापार एवं कैलाश मानसरोवर की यात्रा के लिए किया जाता है
* मानसरोवर की यात्रा इस दर्रे के माध्यम से अधिक सुगम होती है ।

(ix). जलीपला दर्रा:- यह दर्रा सिक्किम को तिब्बत से जोडता है ।

(x). बोमडिला दर्रा:- यह दर्रा अरूणाचल प्रदेश को तिब्बत से जोडता है ।

(b). मध्य हिमालय (Middle Himalaya):-

- इसे हिमाचल हिमालय या लघु हिमालय भी कहते है ।
- यह श्रेणी 2400 किमी. की दूरी में विस्तृत है ।
- इसकी औसत चौडाई 50 किमी. है ।
- इस श्रेणी की ऊँचाई लगभग 3700–4500 मी. के बीच पाई जाती है ।
- इस श्रेणी के विभिन्न स्थानीय नाम है:-
- **J & K – Pir Panjal**
- **Himachal Pradesh – Dhauladhar**
- **Uttarakhand - Mussoorie/Nag Tibba**
- **Nepal – Mahabharat**
- **Sikkim – Dokya**
- **Bhutan – Black Mountain**

- मध्य हिमालय तथा वृहत हिमालय के बीच बहुत सी घाटियाँ स्थित है:-
- कश्मीर घाटी = वृहत हिमालय – पीर पंजाल
- कुल्लू घाटी = वृहत हिमालय – धौलाधर
- कांगडा घाटी **(HP)** = वृहत हिमालय – मसूरी
- काठमांडू घाटी = वृहत हिमालय – महाभारत

- इस श्रेणी पर ग्रीष्म ऋतु में शीतोष्ण कटिबन्धीय घास के मैदान पाए जाते है । जिन्हें जम्मू कश्मीर मे 'मर्ग' तथा उत्तराखण्ड मे 'बुग्याल, पयाला' कहा जाता है ।
- शीत ऋतु के दौरान यह श्रेणी बर्फ से ढक जाती है ।
- इस श्रेणी पर स्थित घास के मैदानों का उपयोग स्थानीय समुदाय अपने पशुओं को चराने के लिए करते है ।
- इस श्रेणी क्षेत्र में बहुत से पर्यटन स्थल पाए जाते है । **e.g.** कुल्लू, मनाली, नैनीताल, मसूरी **etc.**
- इस श्रेणी में कुछ प्रमुख दर्रे पाए जाते है :-

(C) शिवालिक (Shivalik):-

- शिवालिक श्रेणी की ऊँचाई 500–1500 मी. के बीच पाई जाती है ।
- इसकी चौडाई 10–50 किमी. है ।
- शिवालिक को विभिन्न स्थानीय नामों से जाना जाता है:–
  - **J & K – Jammu Hills**
  - **Uttarakhand – Dudwa/Dhang** (दूदवा/धांग)
  - **Nepal – Churiaghat** (चूडियाघाट)
  - **A.P. – Dafla** (दाफला)
  - **Miri** (मिरी)
  - **Abhor** (अबोर)
  - **Mishmi** (मिश्मी)

- शिवालिक श्रेणी के निर्माण के दौरान मध्य हिमालय तथा शिवालिक श्रेणी के बीच अस्थाई झीलों का निर्माण हुआ था।
- यह झीलें कालान्तर में अवसादों से भर गई जिससे समतल घाटियों का निर्माण हुआ।
- इन घाटियों को पश्चिमी हिमालय क्षेत्र में 'दून' तथा पूर्वी हिमालय क्षेत्र में 'द्वार' कहते है ।
  e.g.- देहरादून, कोटलीदून, पाटलीदून, हरिद्वार, निहांगद्वार **etc.**
- इन घाटियों का उपयोग चावल की खेती के लिए किया जाता है ।

चोस (Chos):-

- हिमाचल प्रदेश तथा पंजाब में स्थित शिवालिक श्रेणी क्षेत्र में मानसून के दौरान अस्थायी धाराओं का निर्माण होता है, जिन्हें स्थानीय भाषा में चोस कहते है ।
- यह धाराएँ शिवालिक को विभिन्न भागों में विभाजित कर देती है ।

हिमालय पर्वतीय प्रदेश का प्रादेशिक विभाजन:–

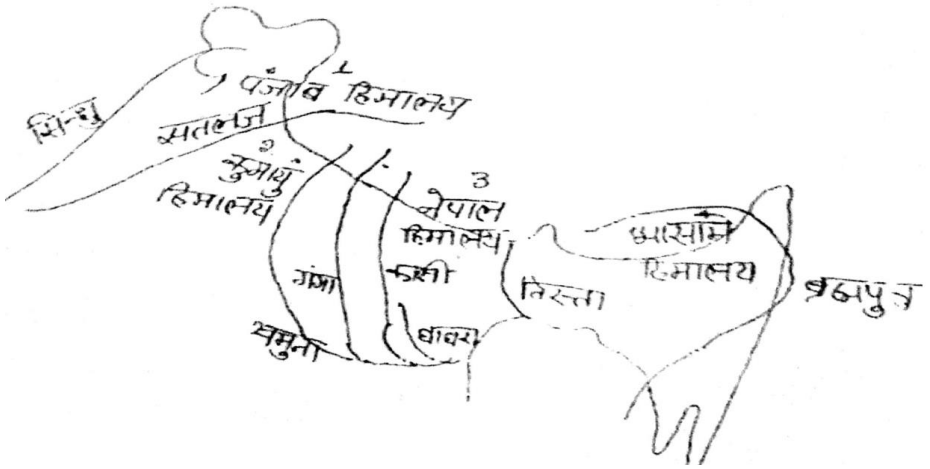

(a). कश्मीर/पंजाब हिमालय **(Kashmir/Punjab Himalaya):-**

- हिमालय का यह भाग सिंधु तथा सतलज नदी के बीच स्थित है ।
- यह लगभग 560 किमी. की दूरी में विस्तृत है ।
- इस भाग में जास्कर, पीरपंजाल श्रेणी एवं जम्मू पहाडियाँ स्थित है ।
- इस भाग में हिमालय की चौडाई सर्वाधिक पाई जाती है । जो लगभग 250–400 किमी. के बीच पाई जाती है ।
- यहाँ हिमालय की ऊँचाई क्रमिक रूप से बढने लगती है ।

(b). कुमायूँ हिमालय **(Kumao Himalaya):-**

- हिमालय का यह भाग सतलज से काली नदी के बीच स्थित है ।
- यह 320 किमी. की दूरी में विस्तृत है ।
- यह भाग मुख्य रूप से उत्तराखण्ड में स्थित है ।
- यहाँ कुछ प्रमुख चोटियाँ स्थित है । **e.g.-** नंदा देवी, केदारनाथ, बद्रीनाथ, कामेट, त्रिशुल ।

(c). नेपाल हिमालय **(Nepal Himalaya):-**

- यह भाग काली तथा तिस्ता नदी के बीच स्थित है।
- यह भाग 800 किमी. की दूरी में विस्तृत है।
- इस भाग में हिमालय की ऊँचाई सर्वाधिक पाई जाती है।
- यहाँ कई प्रमुख ऊँची चोटियाँ पाई जाती है।**e.g.-** माउण्ट एवरेस्ट, कंचनजंगा (8598 मी.)
- यहाँ हिमालय की चौडाई अत्यधिक कम हो जाती है।

(d). असम हिमालय **(Assam Himalaya):-**

- यह भाग तिस्ता से दिहांग नदी के बीच स्थित है।
- यह 720 किमी. की दूरी में विस्तृत है।
- यहाँ हिमालय की चौडाई सबसे कम हो जाती है जो लगभग 150 किमी. हो जाती है।
- इस भाग में हिमालय की ऊँचाई क्रमिक रूप से कम होने लगती है।

2. उत्तरी मैदानी प्रदेशः-

- इस मैदानी प्रदेश का निर्माण नदियों द्वारा जमा किए गए अवसादों से होता है ।
- यह विश्व के सबसे विस्तृत जलोढ मैदान है ।
- यह भारत का नवीनतम प्रदेश है ।
- इस अत्यधिक उपजाऊ मैदान का उपयोग कृषि के लिए किया जाता है तथा यहाँ सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व पाया जाता है ।

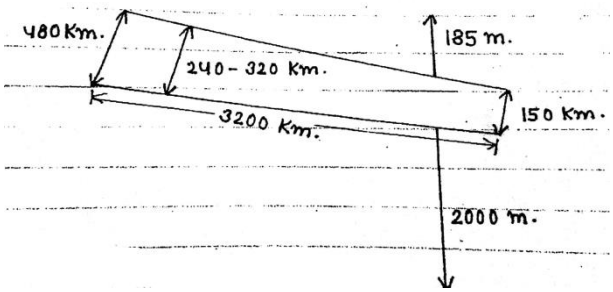

- यह प्रदेश 7 लाख वर्ग किमी. क्षेत्र में विस्तृत है ।
- इस मैदानी प्रदेश की चौडाई लगभग 240-320 किमी. पाई जाती है ।
- इन मैदानों में जलोढ अवसादों का जमाव 2000 मी. की गहराई तक पाया जाता है ।
- यह समतल मैदान है जिनका ढाल मन्द है ।

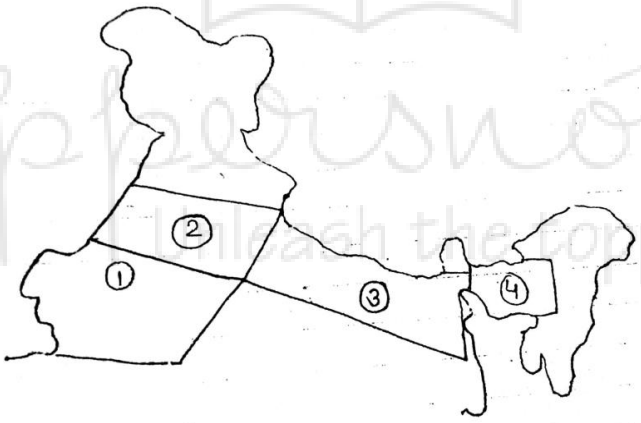

1. भाबर के मैदानः-

- हिमालय पर्वतों के पदेन क्षेत्रों में नदियों द्वारा जमा किये गये बडे अवसादों से 8 से 15 किमी. की चौडाई वाला पट्टीनुमा मैदानी क्षेत्र 'भाबर' कहलाता है ।
- यह क्षेत्र जम्मू-कश्मीर से लेकर अरूणाचल तक विस्तृत है ।
- इन क्षेत्रों में नदियाँ बडे अवसादों के नीचे से होते हुए आगे की ओर बढती है, तथा सतह पर अदृश्य हो जाती है ।

(a). तराई क्षेत्रः-

- भाबर क्षेत्र के दक्षिण में 15-30 किमी. की चौडाई में विस्तृत क्षेत्र जहाँ गहन वनस्पति तथा विविध वन्य जीव पाये जाते है, वह 'तराई क्षेत्र' कहलाता है ।
- पंजाब तथा उत्तर प्रदेश में इस क्षेत्र का उपयोग वर्तमान में गेहूँ तथा गन्ना की खेती के लिए किया जा रहा है तथा तराई क्षेत्र देश के पूर्वी भागों तक ही सीमित रह गया है ।

(b). खादर के मैदान:–

- नदियों के बाढ के मैदानों में हर वर्ष मानसून के दौरान नदियाँ बाढ लेकर आती है तथा इन क्षेत्रों में नये जलोढ अवसाद जमा करती है ।
- यही नये जलोढ अवसादों से बने मैदानी क्षेत्र **'खादर के मैदान'** कहलाते है ।
- ये सर्वाधिक कृषि उत्पादकता **(Productivity)** वाले क्षेत्र है ।

(c). बांगर के मैदान:–

- खादर क्षेत्र के दोनों ओर ऊँचाई पर स्थित मैदानी क्षेत्र, जिसका निर्माण पुराने जलोढ अवसादों से हुआ है, वे बांगर के मैदान कहलाते है ।
- इन क्षेत्रों में कैल्शियम के बने पिण्ड पाये जाते है, जिन्हे **'कंकर'** कहा जाता है ।
- यह सर्वाधिक कृषि उत्पादन वाला क्षेत्र है ।

2. प्रायद्वीपीय पठारी प्रदेशः-

- यह भारत के दक्षिण प्रायद्वीप में स्थित पठारी प्रदेश है ।
- यह भारत का सबसे पुराना भौगोलिक प्रदेश है, जो कि 'गोंडवाना लैण्ड' का भाग हुआ करता था।
- यह एक शिल्ड का उदाहरण है तथा धात्विक खनिजों से सम्पन्न है ।
- क्षेत्रफल के आधार पर यह भारत का सबसे बडा भौगोलिक प्रदेश है ।
- यह भारत का सबसे बडा भौतिक प्रदेश जो 16,00000 वर्ग किलोमीटर क्षेत्र मे विस्तृत है ।
- इस पठारी प्रदेश की ऊंचाई लगभग 600 से 900 मीटर पाई जाती है ।
- यह भौगोलिक प्रदेश बहुत सी पर्वत श्रृंखलाओं तथा पठारों से बना है ।
- इस प्रदेश में मिलने वाले प्रमुख पठार निम्न है -

(a). मेवाड पठारः-

- अरावली के पूर्व में स्थित पठार।
- इस पठार का ढाल पश्चिम से पूर्व की ओर है ।
- इस पठार पर 'बनास नदी' बहती है ।

(b). मध्य भारत पठारः-

- मेवाड पठार के पूर्व में स्थित है ।
- इस पठार का ढाल दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर है ।
- इस पठार पर 'चम्बल नदी' बहती है, तथा बीहडों का निर्माण करती है ।

(c). बुन्देलखण्ड पठारः-

- मध्य भारत पठार के दक्षिण-पूर्व में स्थित है ।
- यह पठार दक्षिणी उत्तरप्रदेश तथा उत्तरी मध्यप्रदेश में स्थित है ।
- इस पठार पर अर्द्धशुष्क परिस्थितियाँ पाई जाती है ।
- इस पठार पर से केन तथा बेतवा नदियाँ (गंगा की सहायक नदी) बहती है, जो कि गहरी घाटियों तथा जल प्रपातों का निर्माण करती है ।

(d). मालवा पठारः-

- अरावली श्रेणी, मेवाड पठार, मध्य भारत पठार, बुन्देलखण्ड पठार तथा विन्ध्याचल पर्वतों के मध्य स्थित 'त्रिभुजाकार पठार' है ।
- इस पठार पर 'लावा' की परत पाई जाती है, जिसके अपक्षय से यहाँ काली मिट्टी का निर्माण हुआ है ।
- इस पठार के उत्तरी भाग में चम्बल नदी बहती है तथा दक्षिणी भाग में नर्मदा नदी बहती है ।

(e). बाघेलखण्ड पठार:–

- कैमूर पहाड़ियों के पूर्व में स्थित पठार।
- मुख्य रूप से मध्यप्रदेश व छत्तीसगढ राज्य में स्थित।
- यह पठार सोन अपवाह तंत्र को महानदी अपवाह तंत्र से अलग करता है ।

(f). छोटा नागपुर पठार:–

- झारखण्ड राज्य में स्थित पठार।
- यह भारत का सर्वाधिक खनिज सम्पन्न क्षेत्र है, जहाँ लौह अयस्क व कोयले (बिटुमिनस, जिसे गोंडवाना कोयला भी कहते हैं) के सबसे बडे भण्डार पाये जाते है ।
- इस पठार पर से 'दामोदर नदी' बहती है, जो कि उसे दो भागों में विभाजित करती है– दामोदर नदी के उत्तर में स्थित भाग 'हजारीबाग पठार' तथा दक्षिण में स्थित भाग 'रांची पठार' कहलाता है
- इस पठार में स्थित दामोदर नदी की घाटी कोयले के भंडारों के लिए विख्यात है ।

(g). मेघालय पठार:–

- मेघालय राज्य में स्थित पठार जिसे 'छोटा नागपुर पठार' का ही विस्तार माना जाता है ।
- इस पठार पर गैरो **(Garo),** खासी तथा जयन्तियाँ पहाड़ियाँ स्थित है ।
- यह पठार भी खनिजों में सम्पन्न है तथा यहाँ लौह अयस्क, कोयला (लिग्नाइट कोयला) तथा यूरेनियम के भण्डार मिलते है ।
- खासी पहाड़ियों में मॉसिनराम व चेरापूंजी नामक स्थान स्थित है, जहाँ विश्व में सर्वाधिक मात्रा में वार्षिक वर्षा प्राप्त की जाती है ।

(h). दण्डकरण्य पठार:–

- दक्षिणी छत्तीसगढ तथा पश्चिमी उडीसा में स्थित पठार।
- इस पठार के छत्तीसगढ में स्थित भाग को 'बस्तर का पठार' भी कहा जाता है ।
- इस पठार पर भारत के सबसे बडे 'बॉक्साइट के भण्डार' पाये जाते है ।
- इस पठार पर से 'इन्द्रावती नदी' बहती है ।
- बस्तर पठार क्षेत्र में लौह अयस्क की विख्यात खान दल्लीराजहरा **(Dalli Rajhara)** छत्तीसगढ में स्थित है ।

(i). करबीआंगलोंग पठार:–

- यह पठार असम में स्थित है ।
- इस पठार पर मिकिर तथा रेंगमा पहाड़ियाँ स्थित है ।

(j). दक्कन पठार:–

- दक्षिण भारत में स्थित त्रिभुजाकार पठार
- इस पठार पर लावा की परत मिलती है, जिसके अपक्षय से इस क्षेत्र में काली मिट्टी का निर्माण हुआ है ।